

प्रशिक्षण

श्री उत्तम सिंह जी ने फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत संस्थान एवं बाहर कई प्रशिक्षणों में भाग लिया। जैसे-इन्होंने चारा उत्पादन तकनीक, जैविक खेती, वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन, कृषि वानिकी, मृदा स्वास्थ्य, उन्नत सब्जी उत्पादन तकनीक, श्रीअन्न का उत्पादन एवं उपभोग, बायो फेन्सिंग तथा एकीकृत कीट एवं पोषक तत्व प्रबंधन इत्यादि पर प्रशिक्षण प्राप्त किया

भ्रमण

प्रक्षेत्र प्रदर्शन के लिये श्री उत्तम सिंह जी को भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी, रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, कृषि विज्ञान केन्द्र झांसी, कृषि विज्ञान केन्द्र, दतिया, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, दतिया इत्यादि संस्थाओं का भ्रमण करवाया गया एवं वहां उपयोग होने वाली तकनीकियों को उन्होंने जाना एवं अपने खेत पर उनको अपनाया।

प्रोत्साहन

एक प्रगतिशील किसान होने के नाते, संस्थान एवं राज्य सरकार द्वारा कई पुरस्कारों से वे सम्मानित किये जा चुके हैं। श्री उत्तम जी संस्थान से कई बार बेस्ट फार्मर अवार्ड एवं राज्य सरकार द्वारा चैंपियन फार्मर अवार्ड भी प्राप्त कर चुके हैं।

वर्षभर सब्जी उत्पादन

इनके खेत पर सब्जी उत्पादन में कम से कम उर्वरक एवं कीटनाशकों का छिड़काव किया जा रहा है। कीटों की रोकथाम के लिए सब्जियों में ट्रैप का उपयोग किया जाता है। इससे फसल में कीट नियंत्रण पर खर्चा दवाओं के स्थान पर कम हो रहा है। ट्रैप के बारे में परियोजना के किसानों को कोई अनुभव नहीं था। परियोजना के साथ जुड़ने के बाद किसानों ने ट्रैप का उपयोग करना शुरू किया।

मचान मॉडल

परियोजना के अंतर्गत किसानों को समझाया गया कि किस प्रकार सब्जी को



वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन प्रशिक्षण

समन्वित कृषि प्रणाली फायदेमंद व्यवसाय

पुरुषोत्तम शर्मा*, सुनील कुमार*, मुकेश चौधरी*,
विश्व भास्कर चौधरी*, आर.पी. द्विवेदी*, शान्तनु कुमार दुबे**,
महेश एच.एस.*, एस.के.सिंह*, अविनाश चंद्रा*, अतुल सक्सेना*,
सचेन्द्र त्रिपाठी*, प्रतीक श्रीवास्तव* और रोहित वर्मा*

भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान द्वारा पॉली, पलिन्दा, ढीमरपुरा, दातानगर एवं परवई गांव में फार्मर फर्स्ट परियोजना वर्ष 2016 से चलाई जा रही है। इस परियोजना के अंतर्गत किसानों को विभिन्न तकनीकी आधारित कृषि प्रणालियों पर प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही संस्थान द्वारा कई फसलों के उन्नत किस्म के बीज किसानों को दिए गए और उन्हें कृषि की कई तकनीकियों पर खेती करने के लिए प्रेरित किया गया। इसमें पलिन्दा गांव के श्री उत्तम सिंह राजपूत जी के यहां समन्वित कृषि पर जोर दिया गया। इनके यहां सब्जी उत्पादन, फसल उत्पादन के साथ-साथ वर्मीकम्पोस्ट खाद एवं नेपियर घास लगायी गयी, जिससे पशुओं को वर्षभर चारा मिल सके। श्री राजपूत जी ने अपने खेतों में सब्जी उत्पादन को ज्यादा महत्व दिया। वे मुख्य रूप से वर्षभर गोभी उत्पादन करते हैं। इससे उनकी आय वर्षभर प्रतिदिन होती है।

फार्मर फर्स्ट परियोजना से जुड़कर श्री उत्तम सिंह राजपूत जी ने सब्जी उत्पादन में रासायनिक खाद के स्थान पर जैविक खाद को अधिक महत्व दिया। परियोजना से प्राप्त वर्मी क्यारी लगाई, जिनमें इनके पशुओं से प्राप्त अपशिष्ट का सही प्रयोग हुआ।

*भाकृअनुप-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी-284003 (उत्तर प्रदेश);
**भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

परियोजना से जुड़ने से पहले ये पशुओं को अधिकतर सूखा भूसा ही खिलाते थे। उस समय पशुओं का दुग्ध उत्पादन काफी कम था। अब ये हरा चारा और भूसा आधी-आधी मात्रा में खिलाते हैं। हरे चारे के रूप में नेपियर घास से चारा वर्षभर लेते हैं। इसके अलावा रबी, खरीफ मौसम में बरसीम, जई, ज्वार इत्यादि चारे को पशुओं को खिलाते हैं। इससे पशुओं में दुग्ध उत्पादन के साथ-साथ प्रजनन क्षमता भी बढ़ी है।



श्री उत्तम सिंह के लहलहाते खेत

उगाया जाए जिससे ज्यादा फायदा लिया जा सके। इसके साथ-साथ फसलों में होने वाले कीटों एवं रोगों के नुकसान या सड़ने-गलने के नुकसान से बचा जा सके। इसके लिए किसानों को मचान मॉडल के बारे में बताया गया। इसमें बेल वाली सब्जियों को उगाया जाता है। इस मॉडल में सब्जियों को तार या रस्सी के सहारे लटकाकर रखा जाता है। इससे सब्जियों को सड़ने व खराब होने से बचाया जा सकता है। इसके साथ-साथ कीट रोगों से बचने में भी उपज का फायदा होता है। इसका बाजार भाव भी काफी अच्छा मिला एवं फसल के बीच-बीच में अन्य फसल को भी उगाया जा सकता है। इस मॉडल के तहत खेती करने में किसानों को काफी फायदा हुआ। निराई-गुड़ाई में आसानी हुई एवं सब्जियों को तोड़ने में भी आराम रहा तथा सही समय पर सब्जी की तुड़ाई की जा सकी।

वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन

श्री उत्तम सिंह जी के यहां परियोजना की तरफ से वर्मी खाद बनाने के लिए क्यारियां बनाई गयीं। इससे खाद तैयार कर सब्जी फसल में डालते हैं और उर्वरक पर होने वाले खर्च में कटौती कर रहे हैं। वह खाद को बेचकर भी आमदनी प्राप्त करते हैं। ये अभी तक 40-50 क्विंटल वर्मी खाद बेच चुके हैं। वे केंचुआ खाद ज्यादातर किसान अपने खेत में उपयोग करने के लिए ही बनाते हैं। इन्हें देखकर कई किसानों ने



नेपियर घास की भरपूर पैदावार

परियोजना से मिलने वाले लाभ

- उन्नत किस्मों के बीज जैसे-खरीफ में मूंगफली (गिरनार-2,3 एवं टीजी-37, एचएनजी-123), उड़द (शेखर, प्रताप, आईपीयू-2-43), मूंग (शिखा, विराट, आईपीएम-2-3), तिल (टीकेजी-306), मक्का (अफ्रीकन टॉल), ज्वार (एमपी चरी, सीएसएच-24), रागी (जीपीयू-67), सांवां (डीएचएमबी-93.2), लौकी (पूसा किरण, पूसा नवीन, काशी गंगा), लोबिया (काशी कंचन, पूसा धरनी), तोरई (काशी श्रेया), खीरा (पूसा उदय), कद्दू (काशी हरित), रबी फसल में गेहूं (राज-4021, 4079, करण वंदना), सरसों (गिरिराज), चना (जेजी-16), बरसीम (वरदान, बीबी-2, बीएल-10), जई (जेएचओ-822, केंट), टमाटर (काशी अभिमान, पंत टी-3), बैंगन (काशी संदेश, पंत ऋतुराज), मिर्ची (काशी रत्ना, पंत सी-1ए काशी तेज), हाइब्रिड नेपियर (आईजीएफआरआई-1,2,6,10) इत्यादि।
- सब्जियों में कीट प्रबंधन के लिये फेरोमेन ट्रेप, बायो पेस्टीसाइड, चिपचिपे ट्रेप एवं पोषक तत्व प्रबंधन के लिये एनपीके कंसोर्शिया, नैनो यूरिया, राइजोबियम एवं फॉस्फोजीवाणु कल्चर, वर्मीकम्पोस्ट बनाने के लिये वर्मी बैग इत्यादि।
- पशुपालन में राशन पूर्ति के लिये मिनरल मिक्चर एवं सस्थान द्वारा तैयार किये हुए आहार पेलेट इत्यादि।

सारणी: आय का विस्तृत ब्यौरा

विवरण	फल, सब्जी एवं फसल	उत्पादन (लगभग)	दर (प्रति कि.ग्रा.)	वार्षिक आय (लगभग)
सब्जी	गोभी, टमाटर, लौकी, तोरई आदि	-	-	रुपये 200000
अनाज	रबी, खरीफ	-	-	रुपये 150000
दूध	-	-	-	रुपये 50000
पपीता (30)	फल	5 क्विंटल	रुपये 20/कि.ग्रा.	रुपये 10000
नेपियर	-	50000 जड़	रुपये 2/-	रुपये 100000
वर्मी खाद	-	50 क्विंटल	रुपये 10/ कि.ग्रा.	रुपये 50000
कुल				रुपये 560000

केंचुआ खाद उत्पादन करना शुरू किया।

नेपियर घास उत्पादन

इस परियोजना में किसानों को नेपियर चारे की एक महत्वपूर्ण किस्म दी गई, जो एक बार लगाने पर कम से कम 5 वर्षों तक पशुओं को चारा प्रदान करती है। यह पूरे वर्ष हरा चारा प्रदान करती है। इस चारे को पल्लिन्दा के किसान श्री उत्तम सिंह जी ने अपने खेत की मेड़ पर लगाया। कुछ दिनों तक तो उन्हें इससे सिर्फ चारा मिला। बाद में समझाया गया कि अगर इसे पूरे खेत के चारों तरफ लगाया जाये, तो काफी लाभ होगा। इसकी जड़ों को भी बेचा जा सकता है। इससे चारे के अतिरिक्त फायदा मिल सकता है। इस तरह उत्तम सिंह जी ने खेत के चारों ओर नेपियर घास लगा ली और उनको काफी फायदा होने लगा। धीरे-धीरे परियोजना के कर्मचारियों द्वारा भी ग्राहकों को उनके यहां जड़ों को खरीदने के लिए भेजा जाने लगा। उन्हीं को देखकर कई किसानों

ने अपने खेत में नेपियर घास उगाना शुरू कर दिया। किसान इस तरह का काम कर रहे हैं और अतिरिक्त फायदा ले रहे हैं। खेत के चारों तरफ लगाने से जो वह सब्जी उगाते हैं, उनमें कीट का सीधा प्रकोप नहीं होता है। किसान मेड़ों को खाली छोड़ देते थे। आज फार्मर फर्स्ट का किसान मेड़ों से लाखों का फायदा ले रहा है। इस तरह खेत का प्रत्येक भाग आमदनी बढ़ा सकता है। श्री उत्तम सिंह जी ने साबित कर दिया है और उन्हें अलग से पशुओं के लिए हरा चारा उगाने की ज्यादा जरूरत नहीं होती है। वह इसी से वर्षभर हरा चारा ले रहे हैं। श्री उत्तम जी के पास 4 भैंसों हैं, जिनके लिये उन्हें वर्षभर चारा मिलता रहता है। नेपियर घास के कारण चारे की उपलब्धता में 20-25 प्रतिशत वृद्धि हुई। नेपियर घास से वर्षभर हरा चारा उपलब्ध होता रहता है एवं दूध उत्पादन में भी 1.13 लीटर प्रति भैंस वृद्धि हुई।